

॥ श्री नरसिंह जयंती व्रत कथा ॥

प्रह्लाद के पूर्वजन्म का प्रचलित प्रसंग

परंपरागत व्रत-माहात्म्य का संक्षिप्त हिंदी पुनर्कथन

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री नरसिंह जयंती व्रत कथा ॥

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी • श्री नरसिंह जयंती

॥ प्रह्लाद की जिज्ञासा ॥

नरसिंह जयंती की प्रचलित व्रत कथा में प्रह्लाद भगवान से पूछते हैं कि उन्हें ऐसी भक्ति कैसे मिली। भगवान उनके पूर्वजन्म का वृत्तांत सुनाते हैं। अवन्ती में सुशर्मा नामक विद्वान ब्राह्मण के पाँच पुत्र थे। सबसे छोटा वासुदेव था, जो दुर्व्यसनों और एक गणिका की संगति में पड़ गया था।

॥ अनजाने में हुआ व्रत ॥

एक बार वासुदेव और उस गणिका में विवाद हुआ। व्याकुलता के कारण वासुदेव ने दिनभर भोजन नहीं किया और रातभर जागता रहा। उस दिन नरसिंह जयंती थी। गणिका ने भी भोजन और भोग छोड़कर जागरण किया। कथा इस अनायास उपवास और जागरण को भगवान की कृपा से जोड़ती है।

॥ श्री नरसिंह जयंती व्रत कथा ॥

॥ भक्ति और कल्याण का प्रसंग ॥

कथा के अनुसार उसी व्रत के प्रभाव से वासुदेव अगले जन्म में भक्त प्रह्लाद बने। गणिका को भी कल्याण प्राप्त हुआ। यह सुनकर प्रह्लाद ने व्रत की विधि पूछी। भगवान ने वैशाख शुक्ल चतुर्दशी पर संयम, पूजन, कथा-श्रवण, रात्रि-जागरण और सामर्थ्य के अनुसार दान का उपदेश दिया।

॥ कथा से मिलने वाली प्रेरणा ॥

इस प्रसंग पर मनन करते हुए अपने आचरण को सुधारने का संकल्प लें। भक्ति के साथ सत्य बोलना, क्रोध पर संयम रखना और दूसरों के प्रति दया करना जीवन में अपनाएँ। कथा का पाठ शांत भाव से करें और परिवार के सभी सदस्यों के मंगल की प्रार्थना करें।

॥ समापन प्रार्थना ॥

हे लक्ष्मी-नरसिंह! मेरे मन में निर्मल भक्ति जगाएँ।
अभिमान और कटुता से बचकर सद्मार्ग पर चल सकूँ।
प्रह्लाद जैसा विश्वास और सेवा का भाव दीजिए।
॥ जय श्री नरसिंह ॥